आपकी सफलता का प्रवेश द्वार .....

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE   प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

सामान्य अध्ययन / GENERAL STUDIES

निर्धारित समय: 3 hours
Time Allowed :

अधिकतम् अंक
Maximum Marks

नाम. Name : Akanksha Garhwal

मोबाईल नं. Mobile No : 7703837099

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam) हिन्दी

ई-मेल पता. E-mail Address : akankshagarhwal44@gmail.com

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature)

रोल नं. Roll No : दिनांक (Date) 5/01/2021

प्रश्न – पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़े :

- इसमें 3 प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
- प्रश्नों में शब्द सामा, जहा विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
- उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रुप से काटा जाना चाहिए।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

- There are 3 question and all the questions are compulsory.
- The Number of marks carried by a question/part is indicated against it.
- Answer must be written in the medium authorized in the admission certificate which must be started clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) booklet in the space provide. No marks will be given for answer written in a medium other than the authorized one.
- Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the answer book must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained)   टिप्पणी (Remarks)

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

1 A

B

बाणभट्ट संस्कृत के महान लेखक व कवि थे
वह हर्षवर्धन के शासनकाल में प्रसिद्ध कवि थे
इन्होंने प्रसिद्ध रचना - हर्षचरित, कादम्बरी नामक
रचनाएं लिखी है।

C

जार्ज कैसल भवन ग्वालियर के महाराजा जीवाजी
राव सिंधिया द्वारा निर्मित किया गया है।
- यह वर्तमान में माधव राष्ट्रीय पार्क के अन्तर्गत
अवस्थित है। जो मध्यप्रदेश राज्य में स्थित है।

D

सन् 1942 को भारत में क्रिप्स मिशन आया था
मुख्य उद्देश्य - द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों का
सहयोग प्राप्त करना।
अध्यक्ष - सर स्टेफोर्ड क्रिप्स व अन्य सदस्य पेथिक
लारेंस आदि।

E

कर्नाटक युद्ध के अन्तर्गत अंग्रेजों व फ्रांस के बीच
हुए तृतीय युद्ध में आयरकूट ने फ्रांसीसियों का
नेतृत्व किया था।
1760 के वॉडीवाश की लड़ाई में अहम भूमिका
थी।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

F

मिन्हाज-उस-सिराज एक फारसी इतिहासकार था।
मुख्य कृति - तबकात-ए-नासिरी

G

वृहद् स्नानागार - मोहनजोदड़ो नामक स्थान से खुदाई से ज्ञात एक विशाल स्नानागार है।
- यह वहां के निवासियों के जल संरक्षण एवं सदुपयोग को सूचित करता है।

H

I

महमूद गवां

J

3 जून 1947 को माउंटबेटन योजना लाई गई थी।
- इसके तहत भारत की स्वतंत्रता एवं ब्रिटिश राजव्यवस्था की समाप्ति का प्रावधान निहित था।
- इस योजना के बाद ही भारत का विभाजन हुआ।

K

बालाजी बाजीराव मराठा साम्राज्य के प्रतिभाशाली पेशवा था।

L

तुकुमामा एक युद्ध पद्धति है।

M

हैदर अली मुख्यतः दक्षिण भारतीय मैसूर राज्य के सुल्तान थे।
अली का पुत्र टीपू सुल्तान भी एक वीर योद्धा था।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

7

दांडी मार्च एक नमक सत्याग्रह व नमक कानून तोड़ने हेतु गांधी जी द्वारा की गई पदयात्रा है।
– इस यात्रा से ही नमक कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत 1932 को की गई थी।

2 A

फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका को लेकर मुख्यतः दो मत दिए जाते हैं जिनके तहत -
1) क्रांति में दार्शनिकों की कोई भूमिका नहीं थी अर्थात् नेपोलियन के अनुसार रूसो यदि नहीं होता तो फ्रांस की क्रांति नहीं हो पाती।
2) द्वितीय मतानुसार फ्रांस में क्रांति से दार्शनिकों की भूमिका नहीं अर्थात् रूसो पालने में भी मर गया होता तब भी क्रांति होती।

इन मतों को समझने हेतु फ्रांस की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति को समझना जरूरी है। इसके अलावा फ्रांस में भी प्रबोधनकालीन विचार, लौकिक प्रवृत्ति, मानववाद जैसे तत्वों का समावेशन था।।

18 वीं सदी में महान दार्शनिकों में रूसो ने प्रकृति पर बल दिया, असमानता का विरोध किया एवं एकसमान प्रणाली को प्रोत्साहित किया। उनके अनुसार मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है व जंजीरों में जकड़ा हुआ है। वाल्टेयर ने तर्क एवं बुद्धिमता पर जोर दिया जिससे क्रांति में तार्किकता का समावेशन देखा गया। मांटेस्क्यू ने शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार केन्द्रीय शक्तियों का समावेशन विभिन्न स्तरों में विभाजित रहना चाहिए।

B

वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम अर्थात् देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम 1878 को लार्ड लिटन के शासनकाल में लाया गया था।

वस्तुतः 1857 क्रांति पश्चात देशी समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि से इन पत्रिकाओं के माध्यम से सरकार की आलोचनाएं अधिक हो रही थी। अतः इस अधिनियम के अनुसार, "जिला दण्डनायक को स्थानीय सरकार की अनुमति से देशी समाचार पत्र को एक बंधनपत्र पर हस्ताक्षर करवाना पड़ेगा जो सरकारी आलोचनाओं में लिप्त हैं।"

अधिनियम विशेषताएं
- जिला दण्डनायक की कार्यवाही के विरुद्ध अपील की अनुमति नहीं
- मुँह बंद कर देने वाला अधिनियम
- सोम प्रकाश आदि समाचार पत्र के विरुद्ध मामले दर्ज
- अमृत बाजार पत्रिका इस अधिनियम के डर से रातों रात अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित

मूलतः इस अधिनियम के प्रभाव से अंग्रेजी व देशी भाषा में भेद किया गया। इसने देशी भाषा समाचार पत्रों को जानकारी अंग्रेजी भाषा से लेनी पड़ रही थी।

अंततः लॉर्ड रिपन ने इस अधिनियम को रद्द किया।

D

मुगल साम्राज्य का पतन मुख्यत: 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात सीधे तौर पर नजर आता है। इस दिशा में पतन के अहम कारक के तौर पर औरंगजेब सीधे तरीके से दोषी ठहरता है।

परन्तु इस निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व मुगल कालीन सामाजिक-आर्थिक-प्रशासनिक व्यवस्था की जाँच व परिस्थितियों को भी समझने की आवश्यकता है।

इस प्रक्रिया में औरंगजेब की पतन में निम्नलिखित भूमिका है:

1) मारवाड़ के साथ संघर्ष से औरंगजेब बाहर नही निकल पाया एवं राजपूत सहयोग, विश्वास एवं समर्थन में भी कमी मौजूद रही।

2) मराठा संघर्ष का स्थायी समाधान खोज निकालने मे असमर्थ रहा।

3) अकबर की उदारवादी नीति से विचलन नजर आया।

4) दक्कन संघर्ष में उलझा रहा एवं इस हेतु कोई सुधारवादी कदम नहीं उठा पाया।

निम्न कारकों के आधार पर औरंगजेब पतन में सहायक भूमिका निभाता है परन्तु इसके अलावा मुख्य कारक कृषि संकट, जागीरदारी संकट एवं मुगल वैज्ञानिक-तकनीकि विकास में कमी रहे हैं।

£

औद्योगिक क्रांति विश्व जगत हेतु एक महान एवं प्रगतिशील क्रांति साबित हुई है जिसके परिणाम निम्नलिखित हैं :

1) आर्थिक परिणाम :- आंतरिक बाह्य व्यापार में वृद्धि
- शेयर बाजार से पूँजी का एकत्रीकरण संभव
- शहरीकरण को बढ़ावा मिला
- सस्ती वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित
- आर्थिक संतुलन से अर्थव्यवस्था का जुड़ाव संभव हो पाया।
- कुटीर, लघु उद्योगों की स्थापना हुई।

2) राजनीतिक परिणाम :- मध्य वर्ग समृद्ध
- श्रमिक महत्व वृद्धि से श्रमिक संगठन निर्मित हुए जिन्होंने सुधारों हेतु सरकार को बाध्य किया।
- राजनीतिक गतिशीलता में वृद्धि
- श्रमिक कल्याण हेतु - कारखाना कानून, चिकित्सा सुविधा
- कच्चा माल प्राप्ति व बिक्री से उपनिवेशवाद बढ़ावा

अंततः औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा से विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त।

3) सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र :- सामंत जागीरदार वर्ग से भिन्न नवीन वर्ग उदय
- शोषक शोषित संबंध मौजूद
- जीवन रक्षक दवाइयां निर्मित → मृत्यु दर कमी, जनसंख्या वृद्धि
- मशीनीकृत समाज से मानव थकान, अलगाव से ग्रसित

- संयुक्त परिवार टूटने से पलायनवादी संस्कृति जन्मी

4) वैचारिक क्षेत्र में :

- मुक्त व्यापार विचारधारा आई
- उपयोगितावादी विचारधारा
- भौतिक सुख सुविधा वृद्धि से वैश्वीकरण
- पर्यावरणीय समस्याएं व संरक्षण अवधारणा
- नारीवादी आंदोलन से कार्यक्षेत्र विस्तृत व शिक्षा का प्रसार, मताधिकार, संगठन

निष्कर्षतः औद्योगिक क्रांति ने मानवीय सामाजिक-आर्थिक जीवन को गहरे तौर पर प्रभावित किया।

F

1857 का विद्रोह मुख्यतः ब्रिटिश आर्थिक राजनीतिक नीतियों, सामाजिक सांस्कृतिक हस्तक्षेप, ब्रिटिश भूराजस्व नीतियों एवं सैनिक विषमताओं के आधार पर घटित घटना है।

इस विद्रोह का व्यापक तौर पर प्रसार हुआ वस्तुतः यह प्रथम विद्रोह था परन्तु इसके शीघ्र पतन व असफलता हेतु निम्नलिखित कारक जिम्मेदार हैं:

1) विद्रोह का प्रसार व प्रकृति काफी सीमित थी।
2) अधिकांश भारतीय वर्ग का समर्थन हासिल नहीं जमींदार-भूपतियों ने ब्रिटिशों को समर्थन एवं मध्यवर्ग इससे दूर रहा।
3) संगठनात्मक एकीकरण का अभाव एवं नेतृत्व का अभाव रहा जिससे विद्रोह की दिशा व कार्यप्रकृति का सुचारु निर्धारण नहीं हो पाया।
4) इसके अलावा ब्रिटिश आधुनिक हथियार, सक्षम कमाण्डर व सेनापति भारतीय विद्रोहियों से काफी आधुनिक व सक्षम थी।
5) प्रसार सीमित होने से विद्रोह को दबाना आसान हुआ।

निष्कर्षतः विद्रोह की असफलता के बावजूद इससे संगठन, एकता व राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव रखी।

6

मोहम्मद बिन तुगलक तुगलक वंश का एक दूरदर्शी, योग्य, कुशलतम शासक था जिसने अपने पूर्ववर्ती शासकों के समान राजत्व सिद्धांत का अनुकरण किया जिसमें - निरंकुशता पर बल आदि सिद्धांत शामिल थे।

मोहम्मद बिन तुगलक को उसके आर्थिक-प्रशासनिक कार्यों के कारण पहचाना जाता है जो निम्नलिखित है:

1) राजधानी परिवर्तन: दिल्ली से राजधानी को दौलताबाद परिवर्तित किया जो प्रशासनिक कदम था परंतु जनसामान्य कठिनाई से पुनः दिल्ली राजधानी किया गया।

2) सांकेतिक मुद्रा का चलन: चांदी की कमी की वजह से तांबे की सांकेतिक मुद्रा चलाई परन्तु मुद्रा अवमूल्यन व तांबे की नकली मुद्रा से यह प्रयास भी असफल रहा।

3) दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि: उचित कदम था क्योंकि उपजाऊ क्षेत्र से अधिक भूराजस्व प्राप्त हो सकता था परन्तु असफल रहा।

4) कृषि सुधार: इस दिशा में बजट आवंटित किया गया परंतु भ्रष्टाचार, अव्यवस्था के कारण योजना असफल रही।

5) खुरासान अभियान एवं कराचिल अभियानों के माध्यम से भी क्षेत्र विस्तार व सीमा सुरक्षा की योजना बनाई गई परंतु शासकों पर उचित

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

नियंत्रण अभाव व प्रशासनिक सख्ती की कमी से यह अभियान असफल रहे।
निष्कर्षतः दूरदर्शिता के साथ कुछ कालक्रम में प्रशासनिक समझ का अभाव था।

11

ब्रह्म समाज की स्थापना 1828 में राजाराममोहन राय द्वारा कलकत्ता में की गई थी जो पूर्व में ब्रह्म सभा के नाम से जाना जाता था।

ब्रह्म समाज का मुख्य उद्देश्य:

- हिन्दू धर्म में सुधार
- सभी धर्मों की अच्छाईयों को अपनाना
- मूर्तिपूजा विरोध
- एक ब्रह्म पूजा उपदेश

- ब्रह्म समाज एकेश्वरवाद का समर्थन करता है एवं धार्मिक एकता पर बल देता है।
- ब्रह्म समाज के सिद्धांत व दृष्टिकोण का मुख्य आधार मानव-विवेक (तर्क-शक्ति) एवं वेद व उपनिषद है।

ब्रह्म समाज के तहत निम्नलिखित बातें शामिल है:

- आत्मा अमर है
- आत्मिक उन्नति व ईश्वरीय अनुभूति हेतु प्रार्थना आवश्यक है
- पुस्तक या व्यक्ति कभी मोक्ष का साधन नहीं हो सकते
- सामाजिक एकता पर बल देना
- विश्वबंधुत्व पर बल देना
- धर्म के पालन हेतु कर्मकाण्ड व अंधविश्वास का खंडन करना

निष्कर्षतः ब्रह्म समाज ने परवर्ती कई संगठनों व भारतीय पुनर्जागरण को सकारात्मक दिशा में प्रेरित किया।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
आपकी सफलता का प्रवेश द्वार....
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE
प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

J

मुगल शासकों के अंतर्गत हुमायुं एक कमजोर शासक के तौर पर नजर आता है जिसकी असफलता के कई कारण है।

1) साम्राज्य का बंटवारा: बाबर द्वारा हुमायुं को साम्राज्य का एक समान बंटवारा अपने भाइयों में करने की इच्छा जाहिर की गई थी। हुमायुं ने इसी दिशा में राज्य का विभाजन किया। अंततः दिल्ली सल्तनत गद्दी प्राप्ति की दिशा में भाइयों में फुट हुआ एवं इसमें सहयोग हेतु एकजुटता नजर नहीं आई। जो असफलता की ओर ले गया।

2) शेरशाह की शक्ति की उपेक्षा: 1532 में चुनार के किले में संधि न करके यदि हुमायुं शेरशाह को पराजित कर देता तो आज स्थिति विपरीत होती। उसने शेरशाह की बढ़ती शक्ति को चुनौती नहीं समझा।

3) विलासितापूर्ण जीवन: युद्ध व विस्तार के दौर में हुमायुं विलासिता को अहमियत देता था। गुजरात विजय उपरांत बहादुरशाह को नियंत्रित करने की जगह वह मांडू में आराम कर रहा था जो अंततः गुजरात पर पुनः बहादुरशाह ने अधिपत्य जमाया।

4) हुमायुं की दुर्बलता: हुमायुं ने कोई विशेष कठोर कदम साम्राज्य सुरक्षा व विस्तार में नहीं उठाऐं।

अंत: पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर उनकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न संख्या 1

प्रथम विश्व युद्ध पश्चात पेरिस शांति सम्मेलन में युद्ध का आरोपी जर्मनी को घोषित करते हुए उस पर वर्साय की आरोपित संधि थोपी गई जो 28 जून 1919 को संपन्न हुई।

इस संधि के प्रावधान निम्नलिखित हैं:

1) प्रादेशिक प्रावधान: एलसेस लॉरेन का क्षेत्र फ्रांस को वापस सौंपना।
- मेमेल बंदरगाह पर लिथुआनिया का आधिपत्य
- जर्मनी के सार क्षेत्र पर फ्रांस का 15 वर्षों तक आधिपत्य व यह क्षेत्र कोयला संपन्न क्षेत्र था।

2) आर्थिक प्रावधान: युद्ध क्षतिपूर्ति की भारी रकम जर्मनी पर आरोपित की गई।
- जर्मनी के व्यापार पर प्रतिबंध लगाया गया।
- जर्मनी प्रतिवर्ष 10 लाख टन कोयले की आपूर्ति फ्रांस को करेगा।

3) सैन्य प्रावधान: स्थल सेना को 1 लाख तक सीमित
- वायु सेना विघटित की गई
- नौ सेना सीमित की गई
- सैन्य सामग्री, हथियार आयात-निर्यात पर प्रतिबंध

निष्कर्ष: इन कठोर प्रावधानों के आधार पर ही वर्साय की संधि अपमानजनक, कठोर व युद्ध विराम संधि कहलाती है जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के बीज निरूपित किए।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

L

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात पेरिस शांति सम्मेलन में लिए गए निर्णय पूर्णरूप से शांति व समन्वय की दिशा में नजर नहीं आए।

वस्तुतः राष्ट्रसंघ की स्थापना के साथ ही उसकी असफलता भी सामने आई जब औपनिवेशिक शक्तियों की तुष्टीकरण की नीति को नियंत्रित करने में वह असफल व असहाय नजर आया। इन राष्ट्रों की तुष्टीकरण की नीति मुख्यतः जर्मनी, इटली, व जापान के प्रति नजर आई।

- इंग्लैण्ड ने अपने व्यापारिक आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए जर्मनी के साथ उसके सुडेटनलैण्ड की मांग को पूरा किया व म्यूनिख समझौते (1938) के तहत इसे सुनिश्चित किया।
- इसी प्रकार जापान के मंचूरिया क्षेत्र पर आक्रमण को भी अस्थायी समर्थन किया गया वस्तुतः जापान से व्यापारिक हित रूस को नियंत्रित करने हुए निश्चित थे।
- इटली में भी भूमध्यसागरीय हित व व्यापार को बढ़ावा देने हेतु उसके प्रसार को रोका नहीं गया।

इसी तुष्टीकरण की नीति ने जर्मनी में नाजीवाद व फासीवाद (इटली) को समर्थन मिला व अंततः द्वितीय विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
आपकी सफलता का प्रवेश द्वार
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE
प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान
मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या 3 A

1688 इंग्लैण्ड में हुई गौरवपूर्ण / रक्तहीन क्रांति विश्व इतिहास की अहम घटना है।

वस्तुतः चार्ल्स II के पश्चात 1685 में उनका भाई जेम्स II शासक बना जो कैथोलिक धर्मानुयायी था और दैवीय सिद्धांत में विश्वास करता है। अतः संसद व राजतंत्र में संघर्ष होने लगा।

इस समय जेम्स का कोई पुत्र उत्तराधिकारी नही था बल्कि एक पुत्री थी जो प्रोटेस्टेन्ट थी अतः यह माना जाता की जेम्स के पश्चात पुत्री उत्तराधिकारी बनेगी। जो हॉलैण्ड के शासक विलियम की पत्नि थी।

किन्तु इस समय जेम्स II की दूसरी पत्नि से पुत्र उत्पन्न होने से निश्चित हो गया कि उसका पालन पोषण कैथोलिक परम्परा से होगा। ऐसी स्थिति में टोरी एवं व्हिग दोनो दलों ने मिलकर जेम्स पुत्री व पति का इंग्लैण्ड सत्ता संभालने हेतु आमंत्रित किया।

अंततः जेम्स को भागना पड़ा व इस तरह बिना रक्त बहाए सत्ता का व्यापक परिवर्तन हो गया इसलिए ही इसे रक्तहीन या गौरवपूर्ण क्रांति की संज्ञा प्राप्त है।

इसी क्रम में राजा ने संसद की शक्ति को स्वीकार किया व 1689 में बिल

Head Office : Rajwada Chowk, Indore : 0731- 4083933, 9111100925

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

बिल ऑफ राइट्स की घोषणा की गई। जिसके तहत कहा गया कि –
1) संसद स्वीकृति बिना राजा कर लगाने की अनुमति नहीं।
2) संसद में सदस्यों को भाषण, बहस की स्वतंत्रता
3) राजा संसद स्वीकृति बिना कोई सेना नहीं रखेगा।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE

प्रश्न संख्या: 3 C

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

अकबर द्वारा किए गए कार्यों एवं सुधारवादी, नवीन कदम के आधार पर उसने राष्ट्रीय एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके अन्तर्गत कई कदम उठाए:

1) अकबर ने सभी दिशाओं में मुगल साम्राज्य को फैलाने का सफल प्रयास किया व केन्द्रशासित राज्य प्रदान किया।

2) प्रशासनिक संगठन के साथ धार्मिक एकता को भी बढ़ावा दिया। शासन बागडोर संभालते ही जजिया कर समाप्ति, तीर्थयात्रा कर समाप्ति, युद्धबंदी धर्म परिवर्तन पर रोक। ऐसे समाज की स्थापना जो भाईचारे को बढ़ावा दे रहा था।

3) अनेक हिन्दुओं को सामंत पद, राजपूतों के प्रति नीति उन्हे उच्च पद प्रदान एवं सम्मान प्रदान किया। योग्यता के अनुसार व्यक्तियों को मनसब पद प्रदान किए। टोडरमल, बीरबल विश्वासपात्र थे अतः हिन्दुओं की मुगल शासक के प्रति आस्था बढ़ी।

4) प्रजा के प्रति शासक का पुत्रवत व्यवहार रूपी दृष्टिकोण दिखाया।

5) दीन-ए-इलाही की स्थापना से शासक व ईश्वर के बीच सीधा संबंध स्थापित किया।

6) अकबर ने सभी प्रकार के व्यवसायों व व्यवसायियों में संतुलन हेतु सुलह-ए-कुल की नीति अपनाई।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

7) धर्म व दर्शन के प्रति गहरी रुचि के कारण 1575 ई. में नई राजधानी फतेहपुर में इबादतखाने की स्थापना की जहां धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा की जाती थी।

8) इस इबादतखाने के द्वार सभी के लिए खोले व उद्देश्य वास्तविक धर्म की तलाश करना व उसपर प्रकाश डालना।

9) न्यायप्रिय शासक की छवि तैयार कर राष्ट्रीय एकता व समानता का उदाहरण पेश किया।

10) मौलवियों के प्रभाव से प्रशासन मुक्ति हेतु अकबर ने ~~[illegible]~~ महजर की घोषणा की। जिसमें वह उस व्याख्या को स्वीकार करेगा जो देश के लाभ में हो व बहुसंख्यक के हित में हो।

11) महजरनामा से राजनीतिक एकता की भावना को बल मिला व राज्य एकता की ओर अग्रसर हुआ।

निष्कर्षतः अकबर एक राष्ट्रीय एकीकरण का मुख्य कर्ताधर्ता साबित होता है।

3 E

समुद्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियों को जानने के कई स्त्रोत मौजूद है जैसे - प्रयागप्रशस्ति अभिलेख जो इसके सेनानायक एवं संधिविग्राहक हरिषेण द्वारा लिखे गए एवं सिक्के।

समुद्रगुप्त की उपलब्धियों को निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत समझा सकते है:

1) साम्राज्य विस्तार:

इसकी नीति युद्ध विजय की नीति थी जो मुख्यतः भौगोलिक सांस्कृतिक आधार पर आधारित थी।

i) प्रथम चरण - आर्यावर्त का अभियान

इसके तहत गंगा नदी के किनारे अहिच्छत्र, पद्मावती, मथुरा जैसे क्षेत्रो को पराजित कर मिलाया एवं इनके प्रति राज्यप्रसभोद्धकरण की नीति अपनाई।

ii) द्वितीय चरण - सीमांत / प्रत्यन्त राज्यों के प्रति नीति

- इसके तहत उ. पूर्वी हिमालयी क्षेत्र में समतट, डवाक कर्तपुर एवं पश्चिमी सीमांत क्षेत्र में मथुरा, यौधेय क्षेत्र को पराजित कर मिलाया एवं इनके प्रति ~~राज्यप्रसभोद्धकरण~~ सर्वकरदानाज्ञाकरण की नीति अपनाई।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

3) तृतीय चरण: आटविकों के प्रति –
मथुरा से नर्मदा नदी के बीच आटविक जातियों को पराजित कर परिचारकीकृत की भांति अपनाई। अर्थात् सेवक बना लेने की नीति।

4) चतुर्थ चरण: दक्षिणापथ अभियान
(12) राज्य संघ को पराजित कर उनके प्रति ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति अपनाई अर्थात् राज्य जीतकर धन संपदा प्राप्त कर पुनः उन्हे राज्य सौंप दिये गये। वस्तुतः यह नीति समुद्रगुप्त की दूरदर्शिता की परिचायक है। दक्षिण भारत में संचार साधन अभाव से शासन करना कठिन होता अतः धन संपदा अर्जित कर आर्थिक शक्ति को मजबूत किया

5) पंचम चरण: विदेशियों के प्रति सौम्य नीति
– शक कुषाणों के विरुद्ध अभियान कर पराजित किया। अंततः उनके प्रति आत्मनिवेदन कन्योपायन गरुत्मदंकित स्वविषय भुक्ति याचना की नीति अपनाई।

② समुद्र का शासन प्रबंध: उसने साम्राज्य को भुक्ति में विभाजित किया जिसका प्रधान उपरिक था। भुक्ति को विषय एवं

विषय को वीथि में विभाजित किया।
- प्रशासन चलाने हेतु विशाल मंत्रिपरिषद थी जो नौकरशाही से संचालित थी।
• कुमारामात्य अधिकारी, संधिविग्रहक, महादण्डनायक, दण्डपाशिक नामक अधिकारी थे।
- विशाल चतुरंगिणी सेना की मौजूदगी
- राजस्व प्रशासन विकसित, आय स्त्रोत भूराजस्व चुंगी

(3) सामाजिक - सांस्कृतिक उपलब्धियाँ -
वह स्वयं ब्राह्मण मतानुयायी था, वैष्णव धर्म पोषक एवं एक बौद्ध धार्मिक व्यक्ति को मंत्री नियुक्त किया अतः धार्मिक सहिष्णु शासक कहलाता है।
• कला में विशेष रुचि - शास्त्रों का धनी ही नहीं रहा था। शास्त्र ज्ञान में इन्द्र के गुरु बृहस्पति एवं संगीत कला में नारद, गंधर्व भी समुद्रगुप्त से लज्जित थे।
• सिक्कों से वीणा वादन के संकेत मिलते हैं जो उसके संगीत प्रेम को संकेतित करते हैं। उसे महान कवि कविराज की उपाधि प्राप्त है।

अंततः समुद्रगुप्त की उपलब्धियों से वह भारत का नेपोलियन कहा जाता है। वहीं नेपोलियन केवल विश्व विजय से जाना जाता है एवं वाटरलू के युद्ध में पराजित हुआ था परन्तु समुद्रगुप्त कभी पराजित नहीं हुआ।

PART - B

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
आपकी सफलता का प्रवेश द्वार.....
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE
प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

1 A
- केपलर जर्मनी का एक महान खगोलशास्त्री था।
- जिन्होंने ग्रहों की गति से संबंधी कक्षीय नियम प्रतिपादित किए जिन्हे केपलर के नियम कहा जाता है।

B
पेट्रार्क को पुनर्जागरण का होने के पश्चात अग्रदूत कहा जाता है।
- इसके अलावा वह मानववाद का जनक माना गया है।

C
फ्रांस की क्रांति मुख्यतः बास्तील के जेल को तोड़कर कैदियों की रिहाई से शुरू हुई समझी जाती है।
यहां से - स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व के नारे प्रतिपादित किए गए।

D
रूसी क्रांति के कारणों में संबंधित खूनी रविवार की घटना।

E
आरण्यक एक ब्राह्मणवादी ग्रंथ है जिसमें प्रथा-रीति रिवाजों का समावेशन है।
इसमें - कर्मकाण्डों का अभाव नजर आता है।

F
- संथारा जैन धर्म से संबंधित एक पद्धति है।
- इसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार भोजन, जल त्यागकर, एकांतवाद में मौनव्रत धारण कर देह त्याग करता है।
- राजस्थान हाईकोर्ट ने 2015 में इसे अमान्य घोषित किया था।

G
प्रार्थना समाज स्थापना 1867 में महाराष्ट्र में आत्माराम पांडुरंग द्वारा की गई थी।
उद्देश्य: हिन्दू धर्म व समाज में सुधार
धर्म को जातिगत रूढ़िवादिता से मुक्ति

H
सैडलर आयोग 1917 में माइकल सैडलर की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय समस्या अध्ययन हेतु लाया गया।
सिफारिशें – 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा, 2 वर्ष इंटरमीडिएट (3) वर्ष की स्नातकीय शिक्षा, महिला शिक्षा समर्थन

I
- राफेल एक फ्रांस से आयातित युद्ध विमान है
- जिसकी क्षमता कई युद्ध विमानों से अत्यधिक है।

J
1951 में तेलंगाना के पोचमपल्ली स्थान से विनोबा भावे द्वारा भू-दान आंदोलन की शुरुआत।
• भूमि दान के माध्यम से जरूरतमंदों को भूमि प्रदान करना।

K
कर्नल रीडर द्वारा रैयतवाड़ी व्यवस्था शुरू की गई थी।
- इसमें सरकार का सीधा संबंध रैयतों (किसान) से था जो भू राजस्व चुकाने हेतु जिम्मेदार थे।
- यह भारत के 51% भाग पर प्रसारित व्यवस्था थी।

L

M
आइन-ए दहशाला पद्धति मुगल भूराजस्व पद्धति है।
शुरुआत - अकबर शासनकाल में टोडरमल द्वारा।
- भूराजस्व की दर स्थानीय स्तर पर हासिल की गई।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

1882 में हण्टर शिक्षा आयोग गठित

उद्देश्य:→ प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा प्रसार
- महिला शिक्षा सुधार समर्थन
- निजी प्रयत्नों से शिक्षा क्षेत्र प्रसारित करना।

INDORE KAUTILYA ACADEMY

2 A

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जनित कठिनाईयों व अशांति को दूर करने, एकता व समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई थी। परन्तु इसकी असफलता द्वितीय विश्व युद्ध जनित विनाशक परिस्थितियों से समझी जा सकती है।

राष्ट्रसंघ असफलता के बिन्दु निम्न है:

1) संविधान एवं संरचना की दुर्बलता
2) वर्साय संधि प्रावधान की कठोरता
3) वैश्विक महाशक्तियों के आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप न करना एवं तुष्टीकरण को प्रोत्साहित करना
4) मुख्य कारण - जर्मनी, इटली, जापान का राष्ट्रसंघ सदस्यता त्यागना एवं संयुक्त राष्ट्र का सदस्यता ग्रहण न करना।
5) फ्रांस का आधिपत्य एवं प्रतिशोधात्मक रवैया
6) निःशस्त्रीकरण विफलता व जर्मनी, इटली का इस सम्मेलन से बाहर हो जाना।
7) विश्वव्यापी आर्थिक संकट।
8) अधिनायकवाद (साम्यवाद, नाजीवाद, फासीवाद) का उदय व संकीर्ण राष्ट्रवादी सोच का प्रभाव

निष्कर्षतः सदस्य राष्ट्रों के स्वार्थपरक रवैया से राष्ट्रसंघ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रहा।

C

पुनर्जागरण से तात्पर्य - लौकिक जीवन की प्रवृत्ति पर बल एवं जिसके केन्द्र में मानववाद को समाहित किया गया।

पुनर्जागरण की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1) मानववाद: स्रोत के रूप में मध्यकाल में अभाव था परन्तु आधुनिक काल में मानववाद को पहचान मिली वहीं परिणाम के तौर पर मानव साहित्य केन्द्र में शामिल हुआ व आलोचनात्मक, धार्मिक विषयों का प्रसार हुआ।

2) व्यक्तिवाद: लौकिक जीवन पर बल, प्रत्येक व्यक्ति का महत्व, व्यक्ति की क्षमता, कार्य उपलब्धियों को पहचान मिली।

3) जिज्ञासा - साहसिकता को बल, व्यापारिक, भौगोलिक मार्गों की खोज संभव।

4) सहज सौन्दर्य पर बल - मध्यकालीन चर्च व्यवस्था समाप्त हुई व प्राकृतिक नवीनता सामने आई मोनालिसा - सामान्य नारी का अंकन।

5) बहुमुखी प्रतिभा विकास - मानव हित व रुचि से युक्त कार्य करने लगा। उदा० लियोनार्दो द विंची चित्रकार, मूर्तिकार, भूगोलवेत्ता आदि।

6) मध्यकालीन स्वरूप - धर्मसुधारकर्ता संरक्षणकर्ता को आधार मिला अंततः विद्वानों बुद्धिजीवियों को संरक्षण मिला, चेतना का प्रसार हुआ।

प्रश्न संख्या

जैन धर्म उत्तरवैदिक कालीन एक महान धर्म है जिसके सिद्धांतों को निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत समझा सकते हैं:

1) महाव्रत / अणुव्रत : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य (महावीर द्वारा रचित)

2) त्रिरत्न संकल्पना : सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व (कर्मफल से मुक्ति हेतु अनुशीलन) सम्यक आचरण

3) शील व्रत : 7 प्रकार के शील व्रत जैसे - दिग्व्रत आदि

4) 10 लक्षण

5) अनेकांतवाद - बहुरूपता का सिद्धांत

6) सप्तभंगीय / स्यादवाद अर्थात सापेक्षता का सिद्धांत

7) नयवाद - आंशिक दृष्टिकोण का सिद्धांत

8) अनेकात्मवाद अर्थात आत्मा की स्वीकृति

9) पुनर्जन्म विश्वास

10) अनीश्वरवादी अर्थात सृष्टि शाश्वत है

11) वेद सत्ता अस्वीकार

12) कैवल्य प्राप्ति - जीव से कर्म का अवशेष समाप्त हो जाने पर मोक्ष की प्राप्ति संभव

13) संथारा - एकांतवास में भोजन जल त्याग से देहत्याग करना।

14) सल्लेखना - अहिंसा व काया क्लेश पर अधिक बल एवं उपवास से देह त्याग करना।

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

E

मुगल काल की सैन्य व्यवस्था की विशेषता के आधार पर ही बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां व औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य की स्थापना व प्रसार को बनाए रखा।

मुगल सैन्य व्यवस्था की अनूठी विशेषता है इसमें विभिन्न प्रजातियों (ईरानी, तूरानी, भारतीय मुसलमान, मराठों, अफगान) का मिश्रण।

- मुगल सैन्य व्यवस्था के (3) अंग थे —

1) मनसबदारी —
2) अहदी सैनिक - बादशाह के सैनिक
3) दाखिली सैनिक - मनसबदारों की सेवा में

- मुगल सेना के (5) भाग थे —

1) पैदल सेना - जिसमें शमशीर बाज, सेहबंदी
2) घुड़सवार में बरगीर आदि।
3) विशालकाय हाथी सेना।
4) तोपखाना
5) नौसेना।

निष्कर्षतः मुगल सैन्य व्यवस्था ने मुगल साम्राज्य विस्तार की आधारशिला के रूप में कार्य किया।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

प्रश्न संख्या 6

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सिकन्दर एक विश्व विजेता की आकांक्षा से उत्तर-पश्चिमी सीमा पर आक्रमण से भारत में प्रवेश किया। जिसके आक्रमण व इससे जनित प्रभावों का सीमित परिणाम नजर आता है।

वस्तुतः इसके बावजूद तात्कालिक प्रभाव न रहने से भी समाज संस्कृति पर दूरगामी प्रभाव नजर आता है।

1) सिकन्दर द्वारा उत्तर पश्चिमी सीमांत क्षेत्र पर आक्रमण व विजय प्राप्ति से वहां राजनीतिक एकता आवश्यकता की ओर ध्यान गया।

2) सीमांत राज्य कमजोरी ने घुड़सवार सेना के महत्व का अंदाजा गया।

3) नियार्कस, एरिस्टोबुलस नामक यूनानी लेखकों ने भारतीय इतिहास लेखन में सहयोग किया। फलतः तिथिक्रम निर्धारण सुनिश्चित हुआ।

4) यूनानी संस्कृति का भारत में प्रवेश हुआ। बुकेफाला, निकैया नगर की स्थापना हुई। भारत में विकसित हेलेनिस्टिक कला जिसकी झलक गांधार शैली में दिखती है यूनानी कला से संबंधित है।
- यूनानी देवता समान मूर्ति का निर्माण होने लगा।
- कला साहित्य ज्योतिष पर इसका प्रभाव नजर आया।

निष्कर्षतः भारतीय संस्कृति सामासिक संस्कृति के रूप में विकसित हुई।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

11

1907 में सूरत में कांग्रेस के अधिवेशन के दौरान कांग्रेस के उदारवादी व उग्रवादी दलों में विभाजन हो गया था।

वस्तुतः इस घटना के पीछे मुख्यतः बंगाल विभाजन व स्वदेशी आंदोलन चलाये जाने की पद्धति को लेकर दोनों दलों में मतभेद था। क्यूंकि उदारवादी स्वदेशी आंदोलन मात्र बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे तो, वहीं उग्रवादी इसे जन आंदोलन के रूप में समग्र भारत में प्रसारित करना चाहते थे।

इसके अलावा इससे पूर्व भी कांग्रेस के अधिवेशन में अध्यक्ष के चुनाव के मुद्दे पर भी दोनों दल आमने सामने थे अंततः 1907 सूरत के अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हो गया। जिसमें उदारवादी गुट में - मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास गोखले थे तो उग्रवादी गुट में - बालगंगाधर तिलक आदि।

प्रश्न संख्या

1 लार्ड वैलेजली ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी आकांक्षा से प्रेरित होकर 1798 में सहायक संधि की शुरुआत की। इसमे सर्वप्रथम हैदराबाद के साथ 1798 में मुख्य तौर पर संधि की गई।

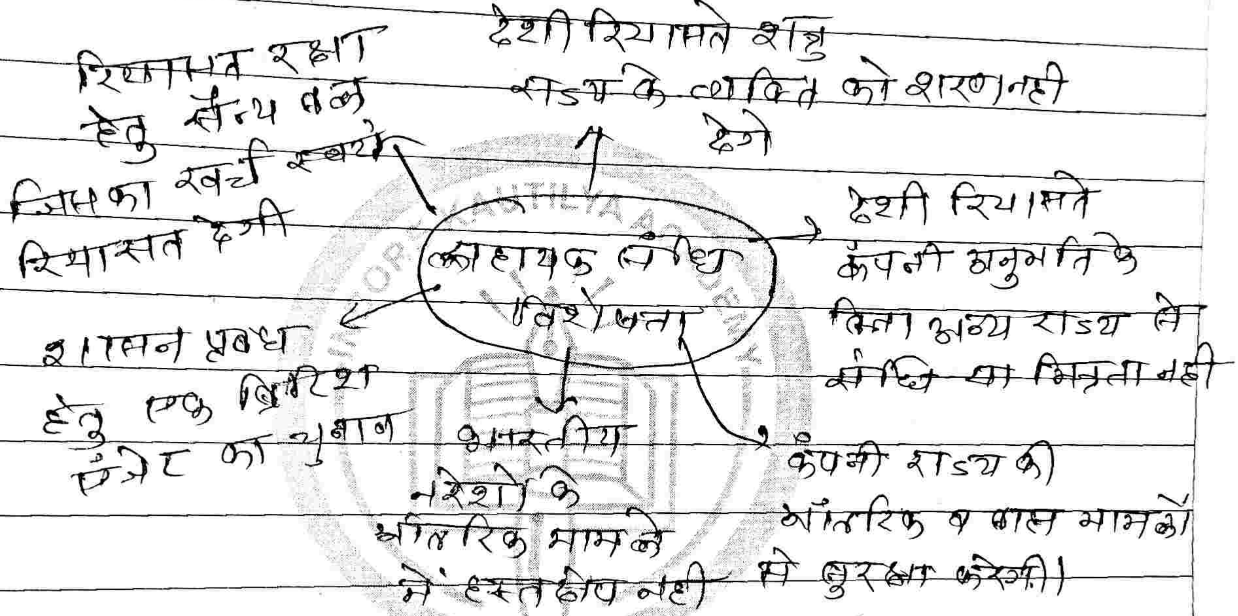

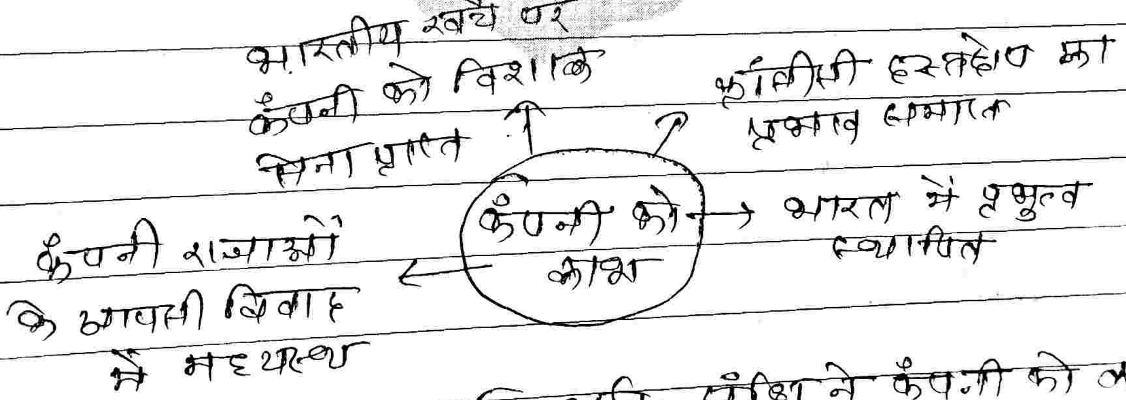

निष्कर्षतः संधि ने कंपनी को लाभ परन्तु भारतीय कृषकों, सैनिकों व जनसामान्य को कष्ट देने का सीधा प्रभाव छोड़ा।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE
प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

5) सिंधु सभ्यता का पतन मुख्यतः 1750 ई.पू. से 1800 ई.पू. के मध्य समझा जाता है। जिसके पतन हेतु ~~जिसके~~ कई मत प्रदान किए गए जो निम्नलिखित हैं:

1) आर्य आक्रमण: गार्डन चाइल्ड व मार्टिमर व्हीलर अनुसार आर्य आक्रमण से सभ्यता का अंत हुआ चूँकि इन्द्र से संबंध जोड़ा गया।
परन्तु यह मत सत्य नहीं वस्तुतः आर्यों का आगमन ही 1500 ई. के मध्य माना गया।

2) प्राकृतिक कारण: हड़प्पा, कालीबंगा, चन्हुदड़ो के पास नदियों के बहाव में परिवर्तन, बाढ़ आदि कारकों से सभ्यता के पतन को समझा जाता है।

3) पारिस्थितिकीय असंतुलन: जमीन के उठाव (विवर्तनिकी संचलन) से सिंधु नदी का बांध हुए गया होगा व परिणामस्वरूप बाढ़ से नगरीय सभ्यता नष्ट हुई होगी।

निष्कर्षतः हड़प्पा सभ्यता के पतन से यहां नगरीय सभ्यता के ग्रामीण सभ्यता की ओर जाने को सूचित किया गया है निश्चित ही नगरीय व्यवस्था, जल संचार प्रणाली व तत्वों का विनाश हुआ व प्राचीन संस्कृति जैसे झूकर-झाकर संस्कृति, बारा संस्कृति में परिवर्तन हुआ होगा।

1

भारत के विभाजन को स्वीकारने के पीछे इतिहासकारों द्वारा कई मत दिए जाते हैं परन्तु गांधीजी एवं कांग्रेस द्वारा विभाजन को स्वीकारने का गहरा कारण निहित है।

वस्तुतः मुस्लिम लीग एवं जिन्ना की पाकिस्तान की मांग किसी भी कीमत पर जारी थी एवं इस हेतु वे किसी भी दंगो व विपरीत परिस्थिति को झेलने को तैयार थे।

- इसी दिशा में भारत में दंगो, साम्प्रदायिक वातावरण जारी था जो देश को एक गृहयुद्ध की ओर अग्रसर कर रहा था।
- ऐसी स्थिति में यदि विभाजन को स्वीकार नहीं किया गया होता तो स्वतंत्र देशी रियासते स्वतंत्र ही रहती व एक पाकिस्तान की मांग पर कई पाकिस्तान जैसे राष्ट्र निर्मित हो जाते है
- उपर्युक्त परिस्थिति में कांग्रेस एवं गांधीजी द्वारा शीघ्र ही विभाजन को स्वीकार किया गया। वस्तुतः महिलाओं के सम्मान, बच्चों के भविष्य, भारत के सामाजिक - आर्थिक विकास के मद्देनजर विभाजन अनिवार्य था।

निष्कर्षतः यह तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर किया गया निर्णय था जो देश हित को समझकर किया गया।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE
प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

3 A)

रूस में हुई 1917 की क्रांति ने कई वैश्विक आर्थिक सामाजिक राजनीतिक परिणामों को जनित किया। वस्तुतः 1917 में हुई इस क्रांति का तात्कालिक कारण प्रथम विश्व युद्ध में हुई रूस की पराजय थी।

वस्तुतः क्रांति के अन्य अहम कारणों को निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत समझ सकते हैं :-

1) निरंकुश राजतंत्र व स्वेच्छाचारी शासन :
वस्तुतः जार निकोलस द्वितीय द्वारा फ्रांस के निरंकुश वातावरण के समान निरंकुश राजतंत्र व स्वेच्छाचारी शासन को चलाया जा रहा था। जो वंशानुगत प्रणाली एवं नौकरशाही पर आधारित था। इससे व्यापक जनअसंतोष मौजूद था।

2) सामाजिक आर्थिक विषमता :
विशेषाधिकार एवं अधिकार विहीन वर्ग की मौजूदगी ने विषमता में काफी वृद्धि की जिससे मध्यवर्ग असंतुष्ट था एवं क्रांति का आकांक्षी था।

3) श्रमिक दशा : श्रमिकों को कार्य के अधिक घंटे एवं पर्याप्त वेतन न प्राप्त होने से असंतोष व्याप्त था। वस्तुतः श्रमिक ऊपर के वर्गों की स्थिति से भी असंतुष्ट था

4) किसानों की दशा: किसान भूमिहीन थे बाकुल, जमींदारों, भूमिपतियों द्वारा किसानों की भूमि हड़प की गई थी अंततः असंतोष व्याप्त था

5) समाजवादी विचारधारा: रूस में तत्कालीन समय में समाजवादी विचारधारा प्रसारित हो रही थी। इसी दिशा में किसानों हेतु समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी एवं मजदूरों हेतु समाजवादी प्रजातांत्रिक पार्टी गठित हुई। इस प्रजातांत्रिक पार्टी के दो दल सामने आए एक-बोल्शेविक जो मार्क्सवाद पर आधारित था एवं दूसरा मेन्शेविक जो क्रमिक परिवर्तन का पक्षधर था।

6) बौद्धिकों की भूमिका: रूसी क्रांति में कई बौद्धिकों ने क्रांति को प्रेरित किया। द कास्र बसपर - गोर्की की कृति आदि ने प्रभाव डाला।

7) अंततः 1905 के रूस जापान युद्ध ने क्रांति को प्रेरित किया।

निष्कर्षतः रूसी क्रांति के कारणों के तत्व स्वयं रूसी वहां की परिस्थितियों में मौजूद थे।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

B) द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों में प्रथम व तात्कालिक कारण। सित. 1939 को जर्मनी के पोलैण्ड पर आक्रमण के तौर पर देखा व समझा जाता है परन्तु इसमें निहित व्यापक कारणों को निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत समझा जा सकता है:

(1) पेरिस शांति सम्मेलन एवं इसमें लिए गए निर्णय:

(i) इटली के प्रति लिए निर्णय: इटली की प्रथम विश्वयुद्ध पश्चात उठी मांगों को नजरअंदाज किया गया एवं सम्मेलन में महत्त्व नहीं दिया गया। वस्तुतः इटली ने प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों का सहयोग इसी शर्त के आधार पर किया था।

(ii) जर्मनी के प्रति निर्णय: वर्साय संधि प्रावधानों का आरोपण जर्मनी के लिए काफी अपमानजनक साबित हुआ। वस्तुतः एल्सेस लॉरेन क्षेत्र फ्रांस को सौंपना, पोलैण्ड-चेकोस्लोवाकिया को स्वतंत्र घोषित करना एवं जर्मनी की प्रादेशिक सीमा से पोलैण्ड के समुद्र मार्ग में जाने हेतु गलियारे का निर्माण करना।

इन निर्णयों ने इन राष्ट्रों के राष्ट्रवाद को गहरे तौर पर आहत किया।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
आपकी सफलता का प्रवेश द्वार.....
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE
प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

साथ निःशस्त्रीकरण: इस सम्मेलन से मुख्य तौर पर जर्मनी व इटली ने स्वयं को अलग कर लिया व नाजीवाद व फासीवाद के सिद्धांतो को प्रसारित करने का निश्चय किया

2) राष्ट्रसंघ असफलता - शांति स्थापना व एकता में वृद्धि हेतु स्थापित राष्ट्रसंघ इन राष्ट्रों की स्वार्थपूर्ति को सुनिश्चित करता हुआ नजर आया। राष्ट्रसंघ ने जर्मनी, इटली के प्रयासों पर नियंत्रण नहीं रखा एवं द्वितीय विश्व के लिए उत्पन्न हो रहे बीजों पर ध्यान नहीं दिया।

3) आर्थिक मंदी - 1929 की आर्थिक मंदी ने सम्पूर्ण विश्व की आर्थिक व्यवस्था को गहरे तौर पर प्रभावित किया। फलतः खाद्यान्न कमी, मूल्य वृद्धि, उत्पादन कमी, उद्योग बंद आदि प्रभावों ने जन असंतोष को बढ़ावा दिया। नाजीवाद इसी असंतोष की उपज है जो अंततः द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बना।

4) तुष्टीकरण की नीति: ब्रिटेन की व्यापारिक आर्थिक महत्वकांक्षाओं ने जर्मनी, इटली, जापान के प्रति तुष्टीकरण की नीति को

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रेरित किया। वस्तुतः जर्मनी की सुडेटनलैण्ड की माँग, इटली की क्षेत्रीय माँग एवं जापान के चीनी मंचूरिया क्षेत्र पर आक्रमण आदि तमाम घटनाओं को अपने व्यापारिक हितों हेतु घटित होने दिया।

निष्कर्षतः द्वितीय विश्व युद्ध मित्र राष्ट्रों की महत्वकांक्षा एवं साम्राज्य विस्तार की इच्छा से प्रेरित कारणों का उपजा प्रभाव था।

INDORE KAUTILYA ACADEMY